शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

# विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक २ : नई दिल्ली : ७-१३ अप्रेल २०१७

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां बिहार प्रान्त में सानंद अहिंसा यात्रा करते हुए भगवान महावीर की निर्वाणस्थली पावापुरी के सन्निकट पधार गए हैं। महावीर जयन्ती पावापुरी में समायोजित है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर २७ अप्रेल को भागलपुर पधार जाएंगे। २८ अप्रेल को वहां अक्षय तृतीया का समायोजन होगा। तदुपरान्त आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर प्रस्थान करेंगे।

## परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण बिहार राज्य में

### बिहार की राजधानी पटना में हुआ भव्य एवं गरिमामय नागरिक अभिनन्दन

**२८ मार्च।** पटना जंक्शन प्रवास का दूसरा दिन। परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातराश के उपरान्त करीब आठ बजे आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम स्थल 'एस.के. मेमोरियल हॉल' की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में पूज्यप्रवर एग्जिविशन रोड पर स्थित नारायण प्लाजा में पधारे। इस इमारत की चौथी मंजिल पर 'तेरापंथ भवन' स्थित है। पूज्यप्रवर ने भूमितल में आसीन होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान...' गीत का आंशिक संगान किया। पूज्यप्रवर करीब ३.५ किमी की यात्रा कर एस.के. मेमोरियल हॉल में पधारे। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम 'आचार्यश्री महाश्रमण नागरिक अभिनन्दन और अणुव्रत पुरस्कार समारोह' के रूप में यहीं समायोजित हुआ। समारोह में बिहार प्रान्त और पटना के गणमान्य लोगों के साथ विभिन्न वर्गों के लोगों की विराट उपस्थिति थी। कार्यक्रम में कोई बाबा के वेश में उपस्थित था तो किसी ने सिर पर पगड़ी धारण कर रखी थी। किसी के सर पर गोल टोपी थी तो किसी ने शिखा धारण कर रखी थी। कोई शूट और टाई पहने हुए था तो किसी के गले में पचरंगा दुपट्टा था। कोई कॉलेज बेग पीठ पर लादे हुए था तो किसी के कंधे पर घरेलू बेग लटक रहा था। इस प्रकार विभिन्न समुदायों की उपस्थिति से यह गरिमामय कार्यक्रम सद्भावना का उदाहरण बना हुआ था।

कार्यक्रम के दौरान तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री विजयसिंह बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयश्री पगारिया, तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री तोलाराम सेखानी, श्रीमती ऋतु बोहरा, चास-बोकारो तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सिद्धार्थ पारख ने अपने आराध्य के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

डॉ. हिंमाशु राय ने कहा--'आज एक ऐतिहासिक दिन है कि पटनावासियों को अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री का अभिनन्दन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। आप पूरे देश में घूम-घूमकर सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का जो संदेश दे रहे हैं, वह निश्चित रूप से बदलाव लाएगा।'

भागलपुर से समागत लॉयन अनुपम सिंघानिया ने कहा--'आपके पदार्पण से हमारे बिहार की धरती पावन हो गई। लॉयन परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करते हुए यह कामना करूंगा कि आपका संदेश हम सबके जीवन में उतरे।'

पटना जैन संघ के उपाध्यक्ष श्री सुबोध जैन ने कहा--'आचार्यश्री का सानिध्य प्राप्त करना हमारा अहोभाग्य है। इतनी लंबी दूरी तय करते हुए आप यहां पधारे, हम धन्य हो गए। मैं पटना जैन संघ की

ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं।'

बिहार प्रादेशिक अग्रवाल समाज की अध्यक्षा श्रीमती गीता जैन ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से बिहार की धरती का कण-कण पवित्र हो गया। आपके दर्शन से हम कृतार्थ हो गए। आपका मिशन सचमुच अभिनंदनीय है।'

पटना माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री आदित्य मूंदड़ा ने कहा--'पूरे माहेश्वरी समाज की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। ऐसी विभूति, ऐसे महापुरुष किसी एक के नहीं होते। आप तो एक बहती निर्मल धारा की तरह हैं, जिससे सबको तृप्ति मिलती है। मैं जैन नहीं होते हुए आज अपने आपको जैन अनुभव कर रहा हूं। आप जैसी विभूति के बारे में कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाना है। आपके बताए मार्ग पर चलकर ही हम आपको अपनी सच्ची श्रद्धा अर्पित कर सकते हैं।'

पटना के मेयर अफजल इमाम ने कहा--'पटना मेयर की हैसियत से और पटना की तमाम जनता की ओर से बिहार की राजधानी पटना में आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं बहुत-बहुत स्वागत-अभिनंदन करता हूं। आपका रूप एक महान व्यक्तित्व का रूप है। हिंसा के इस दौर में आप जो संदेश लेकर चल रहे हैं, अगर इसे अपना लिया जाए तो दुनिया में कितना अमन-चैन छा जाए। आपके इस शहर में आगमन से पटना शहर ही नहीं, पूरा बिहार राज्य गर्व कर रहा है।'

पटना जैन संघ के अध्यक्ष श्री प्रदीप जैन ने कहा--'महावीर और बुद्ध की धरती पर आचार्यश्री का आगमन एक ऐतिहासिक घटना है। गांव-गांव में पांव-पांव चलकर आप अहिंसा यात्रा के माध्यम से जो संदेश दे रहे हैं, वह सबके लिए कल्याणकारी है। आपके स्वागत में यहां की जनता उत्साह से भरी हुई है। मैं आपका अभिनन्दन करते हुए गौरव का अनुभव करता हूं।'

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री कमल नोपानी ने कहा--'बिहार के लिए आज का दिन बहुत ही गौरव का दिन है। मैं अहिंसा यात्रा के साथ यहां पधारने के लिए आचार्यश्री को कोटि-कोटि नमन करता हूं। आप बिहार की जनता पर अपना आशीर्वाद हमेशा बनाए रखें।'

वरिष्ठ अधिवक्ता एवं समाजसेवी श्री डीबी गुप्ता ने कहा--'आचार्यश्री ने हमारे शहर पटना को पावन किया। मैं उनका स्वागत करते हुए स्वयं को सौभाग्यशाली महसूस करता हूं।'

ईसाई धर्म की ओर से फादर जॉर्ज ने कहा--'हम पटनावासियों के लिए आज का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इतने महान संत का आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो रहा है। हमारी यह धरती बहुत सारी पुण्य आत्माओं से जुड़ी हुई है। आज आचार्यश्री के आगमन पर धरती और अधिक पावन बन गई। मैं संपूर्ण बिहार के इसाई समाज की ओर से आपका स्वागत करता हूं और कामना करता हूं कि अहिंसा यात्रा सफल हो।'

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की मंत्री श्रीमती सुषमा अग्रवाल ने कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता की चरणरज पाकर आज बिहार की राजधानी गौरवान्वित हो रही है। आप अहिंसा यात्रा के द्वारा देश को जो अवदान दे रहे हैं, उसके लिए पूरा देश आपका चिरऋणी रहेगा। पर्वत की तरह अपने संकल्प में अडिग, समुद्र की तरह विशाल हृदय, चंद्रमा की तरह शीतल और खिले फूलों की भांति मनोहर आचार्यश्री के स्वागत का अवसर पाकर मैं प्रफुल्लित हूं। आपका आशीर्वाद हम सब पर बना रहे।'

वैष्णो देवी सेवा समिति के अध्यक्ष सरदार जगजीवन सिंह ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए पूज्यचरणों में अपना वंदन अर्पित किया।

जैन विश्वभारती के पूर्व कुलपति श्री रामजी सिंह ने कहा--'बिहार तो जैन धर्म का घर है। इसलिए यह मानना चाहिए आचार्यश्री अपनी धवल सेना के साथ अपने घर आए हैं। आज का दिन मेरे जीवन का

बड़े सौभाग्य का दिन है। मैंने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की कृपा पाई। आज उनके उत्तराधिकारी का दर्शन व स्वागत कर मैं आह्लादित हूं।'

बिहार राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष तथा बिहार सरकार के पूर्व शिक्षामंत्री श्री रामचंद्र पूर्वे ने कहा--'पटनावासियों के लिए ही नहीं, संपूर्ण बिहारवासियों के लिए यह सौभाग्य की बात है कि इस पाटलिपुत्र की धरती पर अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, अध्यात्मवेत्ता, जैनाचार्य श्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। मैं अपनी ओर से और राष्ट्रीय जनता दल की ओर से आपका स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। मुझे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सन्निधि में प्रेक्षाध्यान शिविर में संभागी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व ने मुझे प्रभावित किया। मैं नित्य प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करता हूं। उससे राजनीति में रहते हुए संयमित रहने की क्षमता मुझमें जागृत हुई है। मैं जब बिहार का शिक्षामंत्री था, तब बिहार के विद्यालयों में जीवन-विज्ञान लागू करने का निर्णय हो गया था, किन्तु सरकार बदल जाने से वह निर्णय क्रियान्वित नहीं हो सका। मैं आचार्यश्री के चरणों में शीश नमाते हुए आशीर्वाद की याचना करता हूं।'

## बिहार प्रान्त के राज्यपाल और मुख्यमंत्रीजी का समागमन

कार्यक्रम के मध्य बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीशकुमारजी के आगमन की सूचना प्राप्त हुई तो पूज्यप्रवर उनसे वार्तालाप के लिए मंच के पृष्ठ भाग में स्थित कक्ष में पधार गए। कुछ ही समय में मुख्यमंत्रीजी भी वहीं पहुंच गए। उन्होंने पूज्यप्रवर को करबद्ध नतसिर वंदन किया। तदुपरान्त पूज्यप्रवर का उनसे कुछ वार्तालाप हुआ। उसके अंश इसी विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं। संक्षिप्त वार्तालाप के उपरान्त आचार्यप्रवर पुनः मंच पर पधार गए और मुख्यमंत्रीजी भी मंच पर उपस्थित हो गए। वार्तालाप के दौरान कार्यक्रम में मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीवर्याजी के उद्बोधन हुए।

आचार्यप्रवर के मंच पर पुनरागमन के कुछ ही समय पश्चात बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद भी मंच पर उपस्थित हुए। उन्होंने पूज्यप्रवर को सादर वंदन किया। तत्पश्चात राष्ट्रगान का संगान हुआ। अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए अपने विचार व्यक्त किए। पटना प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री तनसुख लाल बैद ने पूज्यप्रवर के अभिनन्दन और समागन्तुक अतिथियों के स्वागत में वक्तव्य प्रस्तुत किया।

महाश्रमणजी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--

टिकते चरण जहां गुरुवर के धरा तीर्थ वह बन जाती है।
नैतिकता का नाद गूंजता बिना तेल जलती बाती है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी जहां-जहां पधारते हैं और जहां-जहां उनका प्रवचन होता है वह धरती, वह गांव और वह स्थान तीर्थ बन जाता है। वहां के आसपास के वातावरण में नैतिकता का नाद गूंजने लग जाता है। जन-जन के अंतःकरण में ऐसी ज्योति प्रज्वलित हो जाती है, जो उसके मन, जीवन और परिवार को आलोकित करती है। आज परमपूज्य आचार्यप्रवर का नागरिक अभिनन्दन हो रहा है। यह स्वागत और अभिनन्दन किसी व्यक्ति का नहीं, यह मानवीय संस्कृति और भारतीय संस्कृति का अभिनन्दन है, अध्यात्म का अभिनन्दन है, अहिंसा और सद्भावना का अभिनन्दन है, समता, समानता और भाईचारे की ज्योति का अभिनन्दन है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी नैतिक मूल्यों की अलख जागते हुए अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अनैतिकता के

माहौल में आचार्यश्री की यह यात्रा जनता के दिलों में नई ज्योति प्रज्वलित कर रही है। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने आदमी को आदमी बनाने का जो कारखाना स्थापित किया था, आज आचार्यश्री महाश्रमणजी उसी कारखाने के मालिक हैं। आचार्यश्री इसके माध्यम से इंसान को सही अर्थों में इंसान बना रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमारजी ने 'नशामुक्त बिहार' का संकल्प संजोया है। आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा उनके इस संकल्प को बल दे रही है। केवल बिहार ही नहीं, अपितु पूरे भारत में आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा का संदेश पहुंच रहा है। पटना के लोग अहिंसा यात्रा के संकल्पों को स्वीकार कर इस यात्रा में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएं।'

**हमारा कार्य है मन की मांग को रोकना**

अहिंसा यात्रा प्रणेता, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'भगवान महावीर बिहार प्रान्त से जुड़े हुए बताए जाते हैं। यह एक अपेक्षा से तो ठीक है, किन्तु ऐसी आत्माएं तो मानों पूरे संसार से जुड़ी हुई होती हैं। उन्हीं की परंपरा में परमपूज्य आचार्य तुलसी हुए। उन्होंने धर्म के कार्य का नेतृत्व भी किया। हर आदमी सामान्यतया साधु नहीं बन सकता तो गार्हस्थ्य में रहने वाले व्यक्ति का भी जीवन अच्छा रहे, इसके लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रारंभ किया। अणु यानी छोटा और व्रत यानी नियम। साधु के लिए बड़े-बड़े नियम होते हैं। गृहस्थ छोटे-छोटे और अच्छे-अच्छे नियमों को स्वीकार कर ले तो उसका जीवन अच्छा बन सकता है। अणुव्रत ने छोटे-छोटे नियमों से अच्छे आदमी के निर्माण का प्रयास किया है और कर रहा है।

हम लोग गुरुदेव तुलसी की परंपरा में हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी उनके उत्तराधिकारी थे। हम अणुव्रत की बात को अहिंसा यात्रा के माध्यम से प्रसारित कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा में मुख्य रूप से तीन बातों का प्रचार किया जा रहा है--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। विभिन्न जातियों, विभिन्न संप्रदायों और विभिन्न राजनैतिक दलों से जुड़े हुए और विभिन्न भाषा-भाषी लोग परस्पर सद्भावना रखें। आदमी आदमी के प्रति मैत्री भाव रखे, सौहार्द भाव रखे। मारकाट, दंगा-फसाद और हिंसा को व्यर्थ अवसर नहीं मिलना चाहिए। दूसरी बात है--नैतिकता। आदमी जो भी कार्य करे, उसमें यथासंभव ईमानदारी रखने का प्रयत्न करें। उसे बेईमानी, धोखाधड़ी नहीं करनी चाहिए। तीसरी बात है--नशामुक्ति। बीड़ी, सिगरेट, खैनी, गुटखा, शराब आदि नशीले पदार्थों से आदमी को बचना चाहिए। इन तीनों को अहिंसा यात्रा की बात कहा जा सकता है तो अणुव्रत की बात भी कहा जा सकता है।

अणुव्रत गीत में भी कहा गया--अपने पर अपना अनुशासन होना चाहिए। (पूज्यप्रवर ने अणुव्रत गीत के 'अपने से अपना अनुशासन...' पद्य का संगान किया।) पटना में या पटना के आसपास गंगा नदी बहती है। गंगा में लोग स्नान करते हैं। गुरुदेव तुलसी ने कहा कि नैतिकता स्वयं एक गंगा है, आदमी को इसमें स्नान करना चाहिए।

बिहार में हमने शराबबंदी की बात देखी। सरकार शराब के उत्पाद और विक्रय पर रोक लगा कर उसकी आपूर्ति बंद कर सकती है, डंडा भी दिखा सकती है, किन्तु आदमी के मन की मांग को रोकना सरकार के वश की बात कितनी और कैसे हो सकती है। आपूर्ति को रोकना हम साधुओं के वश की बात न भी हो, हम आदमी के मन की मांग को बंद करने का प्रयास करते हैं। मन की मांग को बंद करने के लिए संकल्प और संयम की चेतना अपेक्षित होती है। हमारे पास डंडा नहीं है, किन्तु हम मैत्री की भाषा में लोगों को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं और जनता उस मैत्री की बात को सुनती भी है। कितने-कितने लोग हमारे संकल्पों को स्वीकार भी करते हैं।

बिहार सरकार शराबबंदी का कार्य कर रही है। जनता को सदाचार के पथ पर बढ़ाने का प्रयास बहुत अच्छा है। सरकार का यह कार्य भी है कि कैसे जनता अच्छी बने, निरपराधता को रखने के लिए शराब को छोड़ना भी अपेक्षित होता है। अन्यथा अपराध को बढ़ने का मौका भी मिल सकता है। सरकार द्वारा मनोबल और संकल्प के साथ पैसे की परवाह छोड़कर जनता के चरित्र के उत्थान पर ध्यान दिया जाना बहुत ही अच्छी बात होती है।

अणुव्रत आन्दोलन से जुड़ी हुई हमारी अनेक संस्थाएं हैं। अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्वभारती, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास और राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान--ये चार संस्थाएं अणुव्रत के क्षेत्र में विशेष रूप से कार्य कर रही हैं। अणुव्रत महासमिति ने अणुव्रत पुरस्कार के लिए बिहार राज्य के मुख्यमंत्री श्री नीतीशकुमारजी का चयन किया है। पुरस्कार तो वैसे उपचार है। इस उपचार के माध्यम से नैतिकता के कार्य को प्रोत्साहन देने का प्रयास हो रहा है। आज बहुत महत्त्वपूर्ण अवसर है कि हम धर्म के लोग उपस्थित हैं। राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्रीजी की सहउपस्थिति भी हुई है। बिहार राज्य में खूब शांति रहे। बिहार राज्य में शराबबंदी चल रही है। इससे आगे और भी नशीली चीजों का उपयोग जितना कम हो सके, लोगों का मन जितना बदल सके, अच्छा रह सकेगा।

अहिंसा यात्रा के दौरान हमारा बिहार में अनेक बार आना हो गया, किन्तु पटना पहली बार आए हैं। मैंने नशामुक्ति के साथ दो और संकल्प जोड़ रखे हैं। तीनों संकल्प इस प्रकार हैं--

१. मैं सद्भावपूर्ण व्यवहार करने का प्रयत्न करूंगा।

२. मैं यथासंभव ईमानदारी का पालन करूंगा।

३. मैं नशामुक्त जीवन जीऊंगा।

(आचार्यप्रवर के आह्वान पर समुपस्थित जनमेदनी ने अपने स्थान पर खड़े होकर संकल्पत्रयी स्वीकार की।)

आज नागरिक अभिनन्दन की बात भी जुड़ी हुई है। स्वागत-अभिनन्दन यों तो उपचार होता है, किन्तु हमारे इन संकल्पों को आपने महत्त्व दिया, स्वीकार किया, इसे हमारा अनौपचारिक अभिनन्दन मान सकते हैं। मुझे अच्छा लग रहा है कि आज के कार्यक्रम में बिहार प्रान्त की विभूतियों--राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री महोदय की उपस्थिति है। बिहार में खूब अध्यात्मिक, धार्मिक विकास होता रहे, मंगलकामना।'

## बिहार राज्य के मुख्यमंत्री श्री नीतीशकुमारजी को अणुव्रत पुरस्कार समर्पित

कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीशकुमारजी को अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत पुरस्कार, सन् २०१६ दिया गया। इस संदर्भ में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जैन ने भावाभिव्यक्ति दी। पुरस्कार कार्यक्रम के संयोजक श्री राजकरण दफ्तरी ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अणुव्रत महासमिति के पदाधिकारियों आदि ने मुख्यमंत्रीजी को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, पुरस्कार राशि 'एक लाख इक्यावन हजार रुपए' का चेक आदि मुख्यमंत्रीजी को समर्पित किया। ज्ञातव्य है कि पुरस्कार स्वीकार करने की स्वीकृति देने के साथ ही मुख्यमंत्रीजी ने पुरस्कार राशि को 'मुख्यमंत्री राहत कोष' में जमा कराने की भावना व्यक्त की थी। श्री टीकमचंद सेठिया ने बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद का परिचय प्रस्तुत किया।

## आचार्यश्री के समक्ष अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त कर अनुगृहित हूं : मुख्यमंत्री श्री नीतीश

बिहार राज्य के मुख्यमंत्री श्री नीतीशकुमार ने कहा--'मैं सबसे पहले आचार्यश्री महाश्रमणजी का पाटलिपुत्र की धरती पर स्वागत करता हूं। आप पहली बार पटना पधारे हैं। अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान आप बिहार के विभिन्न क्षेत्रों से गुजरे हैं। सचमुच हम सब लोगों के लिए आपका पदार्पण बहुत सुखद अनुभूति है। आपकी यात्रा जिस समय बिहार में भ्रमण कर रही थी, उसी समय यहां 'शराबबंदी' के रूप

में सामाजिक परिवर्तन की बुनियाद रखी गई। मैं शराबबंदी को राजनैतिक निर्णय नहीं, सामाजिक परिवर्तन की बुनियाद मानता हूं। यह बहुत ही सुखद संयोग है कि मैंने इसी भवन में ६ जुलाई २०१५ को महिलाओं की आवाज पर शराबबंदी का संकल्प संजोया था और पुनः सरकार बनते ही मैंने सबसे पहला यही एलान किया कि शराबबंदी होगी। इस निर्णय के बाद जनता में इसके पक्ष में व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। आज 'शराबबंदी' के कारण लोग इस राज्य में अमन-चैन और खुशी से रह रहे हैं। उनका जीवन स्तर ऊंचा उठ रहा है।

मैं अणुव्रत से बहुत प्रभावित हूं किन्तु उससे संबंधित कार्यक्रम मैं पहली बार हिस्सा ले रहा हूं। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी के बारे में मैं युवावस्था से ही सुनता रहा हूं। कभी उनको प्रत्यक्ष रूप में देखने और सुनने का मौका तो नहीं मिला, किन्तु विभिन्न कार्यक्रमों में उनकी तस्वीरों को देखने का अवसर मिला और उनकी खबरों को पढ़ने का भी अवसर मिला। मुझे खुशी है कि आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का सौभाग्य मिला और उनके समक्ष मुझे अणुव्रत पुरस्कार दिया गया।

मैं पुरस्कार प्रदाताओं को धन्यवाद देता हूं। मैं समझता हूं कि बिहार में शराबबंदी का जो कार्य हुआ, नशामुक्ति के पक्ष में जो वातावरण बना, उसे और आगे बढ़ाने के दृष्टिकोण से यह पुरस्कार दिया गया है। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के उद्देश्य से चलने वाली आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा के सिलसिले में मुझे यह पुरस्कार प्रदान किया गया। उससे मैं अनुगृहित हूं।

आचार्यश्री ने अभी अणुव्रत गीत का पाठ किया। मैं देख रहा था कि वह गीत तो अद्भुत है--'अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा' आत्मानुशासन सबसे बड़ी चीज है। कितना भी कड़ा कानून लगा लें और उसे कितनी भी सख्ती से उसे लागू करें, लेकिन जब तक आत्मानुशासन का भाव पैदा नहीं होगा, तब तक कोई चीज सफल नहीं हो सकती। हम अणुव्रत के इस संदेश के अनुसार आत्मानुशासन का भाव जगाते हुए अब शराबबंदी से नशामुक्ति की ओर आगे बढ़ रहे हैं। यह अणुव्रत गीत सचमुच जबरदस्त है। आगे लिखा है कि--'वर्ण, जाति या संप्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा' शराबबंदी में सभी जाति, धर्म व मजहब के लोगों की भागीदारी है। यह अणुव्रत गीत का ही साकार रूप है। फिर लिखा है--'छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो' महाव्रत तो आप साधु लोग पालते हैं। हम गृहस्थों के लिए अणुव्रत है। अणुव्रत के संकल्पों के जरिए बहुत कुछ हो सकता है। अणु का अर्थ छोटा होता है लेकिन इसकी ताकत सबसे बड़ी होती है।

आचार्यश्री सहिष्णुता का पाठ पढ़ाते हैं। समाज को पारस्परिक भेदभाव और असहिष्णुता के भाव से बाहर निकलना ही होगा। अणुव्रत गीत कहता है--'मैत्रीभाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए' जैन हो, हिन्दू हो, मुस्लिम हो, सिक्ख, इसाई, पारसी व बौद्ध हों, किसी धर्म के हों, सब में मैत्री रहनी चाहिए। अणुव्रत ने एक नीति बताई--'समता सह अस्तित्व समन्वय, नीति सफलता पाए' मैं आपसे बताना चाहूंगा कि हम लोग इसी नीति पर चल रहे हैं। अणुव्रत गीत में शुद्ध साध्य-साधन के लिए जो बात कही गई, वही गांधीजी ने भी कही।

कितना अद्भुत और सुखद संयोग है कि इधर आपकी अहिंसा यात्रा बिहार में हो रही है, उधर बापू के सत्याग्रह आन्दोलन (चंपारण यात्रा) शताब्दी वर्ष का प्रसंग सम्मुख आ रहा है और इसी वर्ष गुरु गोविन्दसिंहजी महाराज का ३५०वां जन्मोत्सव था। मेरा मानना है कि 'शराबबंदी' की सफलता की पृष्ठभूमि में इन तीनों का योगदान रहा है।

हम लोग तो अपने आपको अत्यन्त गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि बिहार राज्य में भगवान महावीर का जन्म हुआ, यहीं ज्ञान की प्राप्ति हुई और यहीं निर्वाण हुआ। भगवान बुद्ध को यहां ज्ञान की

प्राप्ति हुई। गुरु गोविन्दसिंहजी महाराज का यहां जन्म हुआ। बापू के चंपारण सत्याग्रह की यह भूमि है। यह चाणक्य और आर्यभट्ट की भूमि है।

अणुव्रत आंदोलन से मैं बहुत प्रभावित हुआ। तेरापंथ के नवमाचार्य ने जो कार्य अणुव्रत के माध्यम से प्रारम्भ किया, आज उसे आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा के माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आपने ४०००० किलोमीटर की पदयात्रा कर ली है। यह कोई मामूली बात नहीं है। आपके त्याग-तपस्यामय जीवन के कारण ही आपकी बात का प्रभाव समाज पर पड़ता है। मैं अणुव्रत गीत को देखकर बेहद प्रभावित हुआ कि सब कुछ तो इसी में है। आत्मानुशासन और संयम की प्रेरणा हमें अणुव्रत से मिलती है। मुझे उम्मीद है कि आपकी अहिंसा यात्रा से प्रभावित होकर लोग आत्मानुशासन सीखेंगे। यदि ऐसा होता है तो समाज निश्चित रूप से बदलेगा। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश देती हुई आपकी अहिंसा यात्रा बहुत ही सुखद अनुभूति करा रही है।

अतिवाद के इस दौर में आपके द्वारा संयम का पाठ जनता को पढ़ाया जा रहा है, यह बहुत सराहनीय है, प्रशंसनीय है। आपका यह अभियान निरंतर चलता रहे। हम सब लोग अपने कार्यों से इसे बल देने का प्रयत्न करते रहेंगे, ऐसा विश्वास दिलाता हूं।

मुझे जो अणुव्रत पुरस्कार दिया गया। मैं इसे व्यक्तिगत तौर पर नहीं मानता कि यह मेरा पुरस्कार है। यह बिहारवासियों का सम्मान है। जो शराब की लत से लौटकर अपने जीवन को बेहतर बना रहे हैं, यह पुरस्कार उन सबके लिए भी है। एक बार पुनः आचार्यश्री का स्वागत-अभिनन्दन करता हूं, नमन करता हूं।'

**नैतिक क्रान्ति की मशाल है अहिंसा यात्रा : राज्यपाल, बिहार**

बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के अभिनन्दन कार्यक्रम में पहुंच कर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मुझे करीब एक माह पहले जब आपके आगमन की जानकारी मिली तो मैंने भी निश्चय कर लिया कि जब तक आप रहेंगे मैं पटना से बाहर नहीं जाऊंगा। मेरा यह सौभाग्य है कि बिहार की राजधानी पटना में मुझे आचार्यश्री के स्वागत का सुअवसर मिला। मैं आपके दर्शन कर अत्यन्त प्रफुल्लित हूं। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा के दौरान मुझे दूसरी बार सन्निधि मिल रही है। मैं पूरे बिहार की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

मित्रो! आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा नैतिक क्रांति की एक मशाल बनकर मानवता को अध्यात्म के प्रशस्त पथ पर सतत अग्रसर होने की प्रेरणा दे रही है। ऐसा कहा जाता है कि बिहार और झारखंड की धरती जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से बाईस तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली रही है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्यश्री की यात्रा से बिहारवासियों में सचमुच आध्यात्मिक चेतना पुनः जागृत हुई है।

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी प्रज्ञा और दार्शनिक चिंतन से आध्यात्मिक उन्नयन का सुगम रास्ता हमें बताया। आचार्यश्री महाश्रमणजी भी संसार में नैतिक और चारित्रिक विकास का संदेश दे रहे हैं। मैं गत वर्ष आपके सानिध्य में हमारे राज्य के किशनगंज में आयोजित मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गया था। आचार्यश्री ने उस समय अपने अनुयायियों को जो प्रतिज्ञाएं करवाई थीं, उनसे उनके जीवन का मार्ग सहज रूप में प्रशस्त होता है। आज भी आचार्यश्री ने जनता को तीन संकल्प करवाए। मैं सभी लोगों से अनुरोध करूंगा कि इन संकल्पों को अपने-अपने घरों में फ्रेम बनवाकर लगवा लें और प्रातः व सायं उनका स्मरण करते रहें तो दृढ़ता के साथ उनके अनुपालन में हमें बहुत मदद मिल सकेगी।

आज बिहार के मुख्यमंत्रीजी को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी सदाशयता, नेक नीयत, सुशासन के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि शराबबंदी जैसे ऐतिहासिक कदम उठाने के लिए उन्हें

पुरस्कृत किया गया। मैं भी इस साहसिक कदम से जुड़ा रहा हूं क्योंकि विधानसभा और विधानमंडल से पारित प्रस्ताव राज्यपाल की स्वीकृति से ही लागू होता है। मैं निर्णय से जुड़ा हुआ हूं और आज संयोगवश पुरस्कार समारोह में भी मेरा जुड़ाव हो गया।

बिहार सरकार ने १९५६ में वासोकुण्ड में प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान को स्थापित किया था। आचार्यश्री से मेरा विनम्र अनुरोध है कि उस संस्थान पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें तथा यथोचित मार्गदर्शन भी प्रदान करते रहें।

सन् १९५८ में राष्ट्र संत आचार्य तुलसीजी का चतुर्मास कानुपर में हुआ था, जो मेरा गृहनगर है। अहिंसा यात्रा के प्रथम वर्ष में वहां आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मर्यादा महोत्सव किया था। कानपुर मेरी जन्मभूमि है और आज बिहार मेरी कर्मभूमि बना हुआ है। यह महज संयोग ही नहीं, बल्कि इसे मैं अपना परम सौभाग्य भी मानता हूं कि मुझे बिहार की पावन धरती पर आचार्यश्री का अभिनन्दन करने का सुअवसर मिला।'

कार्यक्रम के अंत में राज्यपाल महोदय ने पूज्यप्रवर को प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान के द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें 'तित्थयर भावणा' और 'कल्पप्रदीप' भेंट की। पूज्यप्रवर के मंगलपाठ के पश्चात राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी, श्रीमती सरिता बैद और अणुव्रत महासमिति के कार्यालय सचिव श्री शांतिलाल पटावरी ने किया। कार्यक्रम में प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से संबद्ध लोगों की भी अच्छी उपस्थिति रही। आज का कार्यक्रम उनके लिए प्रमुख खबर का स्थान प्राप्त किए हुए था। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल पर किया गया। पटना के जिलाधिकारी श्री संजय अग्रवाल आदि अनेक प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति भी कार्यक्रम के दौरान रही।

**राज्यपाल महोदय से संक्षिप्त वार्तालाप**

कार्यक्रम के उपरान्त मंच के पृष्ठ भाग में स्थित कक्ष में आचार्यप्रवर का बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद से संक्षिप्त वार्तालाप का क्रम रहा। उसके अंश इस प्रकार हैं--

आचार्यप्रवर--आपने अपने वक्तव्य में प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान की बात कही। उसमें हमारा सहयोग किस रूप में चाहिए?

राज्यपाल--आप उस पर हमेशा आशीर्वाद बनाए रखें तथा वहां जैन शास्त्रों के संदर्भ में विशेष शोध हो। सरकार भी चाहती है कि उसमें कुछ कार्य हो। बजट की कोई समस्या नहीं है। वहां मुझे कई पुस्तकें दी गई थीं, किन्तु दो पुस्तकें मुझे आपके स्तर की लगीं, जो मैंने आपको भेंट की। वैसे वह सरकारी संस्थान है तो राज्यपाल होने के नाते उसका अध्यक्ष मैं ही हूं। इसलिए मेरा निवेदन था कि उस पर थोड़ा ध्यान दिया जाए।

आचार्यप्रवर--वहां के डायरेक्टर ने मुझे कहा था कि राज्यपाल महोदय आपसे बात करेंगे।

राज्यपाल--हां, मैंने उन्हें आज यहां उपस्थित रहने के लिए कहा था, लगता है वे नहीं आ सके। मेरा निवेदन इतना ही है कि आपका मार्गदर्शन उसे मिलता रहे। भले जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के माध्यम से मिले। उसका और जैन विश्व भारती का कॉलोब्रेशन भी हो सकता है।

आचार्यप्रवर--हमने उनसे कुछ बात की है और कुछ अपेक्षा हो तो वे हमसे संपर्क कर सकते हैं। जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय से भी कुछ जुड़ाव हो सकता है।

राज्यपाल--आपके सानिध्य में आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। यह मेरा सौभाग्य है। यदि आप राजभवन में पधार सकें तो बहुत कृपा होगी।

आचार्यप्रवर--हम दूरी आदि की बात देख लेते हैं। जैसी अनुकूलता होगी, उस अनुसार बता सकेंगे।

राज्यपाल--यदि राजभवन में पधारने की सुविधा हो तो वह मेरे लिए प्राथमिकता होगी। आपको पधारने का कष्ट तो जरूर होगा, पर मेरे लिए बहुत अच्छा होगा। यदि वह संभव नहीं होता है तो आप मुझे सूचित कर दीजिएगा, मैं आपके पास आ जाऊंगा। मैं चाहूंगा कि पटना प्रवास के दौरान मैं दुबारा आपके दर्शनों का लाभ प्राप्त कर लूं।

**आचार्यप्रवर का मुख्यमंत्रीजी से वार्तालाप**

मुख्यमंत्रीजी--आपने इस बिहार की पावन भूमि को और ज्यादा पावन कर दिया।

आचार्यप्रवर--हम लोग अहिंसा यात्रा के रूप में ९ नवंबर २०१४ को दिल्ली से चले थे। फिर उत्तरप्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, राजस्थान होते हुए बिहार आए। बिहार से काठमांडू नेपाल गए और नेपाल के विराटनगर में चतुर्मास किया। फिर पुनः बिहार होते हुए पश्चिम बंगाल, भूटान, नागालैंड, असम और मेघालय में जाना हुआ। अभी बिहार प्रांत की यात्रा हो रही है। यहां से हमें कोलकाता और फिर वहां से आगे जाना है।

मुख्यमंत्रीजी--हां, मुझे जानकारी है कि आपका बिहार में तीसरी बार आना हुआ है। भगवान महावीर की जन्मभूमि, ज्ञानभूमि और निर्वाण भूमि बिहार है। उनकी जन्मभूमि को लेकर जैन समुदाय में अलग-अलग विचार हैं। कोई वैशाली तो कोई लछुआड़ और कोई नालंदा का जो खंडहर है, उसके ठीक बगल में स्थित कुंडलपुर को उनका जन्मस्थल मानते हैं।

मुनिकुमारश्रमणजी--जन्म बिहार में हुआ, इसमें किसी को संदेह नहीं।

मुख्यमंत्रीजी--हां, इसमें कोई संदेह नहीं है। भगवान महावीर के निर्वाण दिवस अर्थात दीपावली के अवसर पर निर्वाण स्थली पावापुरी में इस वर्ष से राज्य सरकार आयोजन करेगी। पावापुरी तो अद्‌भुत जगह है। मैं वहां पहले से जाता रहता था। दीपावली के दिन वहां मेला लगता है और बहुत बड़ा लड्‌डू बनता है। मुझे याद है कि मैं जब कोई एक-डेढ़ साल का था, तब मां की गोद में वहां गया था। पता नहीं यह कैसे याद रह गया। पारसनाथ के पहाड़ों पर भी मैं चक्कर लगाकर आया हूं, जो स्थान तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली के रूप में जानी जाती है।

मुनि कुमारश्रमणजी--अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्यश्री नशामुक्ति का कार्य कर रहे हैं। लगभग एक करोड़ से ज्यादा लोग आचार्यश्री के प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प ले चुके हैं। बिहार सरकार ने शराबबंदी के रूप में एक अच्छा कदम उठाया है।

मुख्यमंत्रीजी--आचार्यश्री! इस अभियान को हमें निरंतर चलाते रहना होगा।

आचार्यश्री--हम अहिंसा यात्रा के दौरान मुख्य रूप से तीन बातों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं--सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। परस्पर सद्‌भावना रखना। जाति आदि को लेकर हिंसा को मौका न मिले। जो भी कार्य करो, उसमें ईमानदारी रखने का प्रयास करो। शराब, बीड़ी, सिगरेट आदि का नशा मत करो। इन तीन बातों का प्रचार हम प्रमुख रूप से कर रहे हैं और इच्छुक लोगों को प्रतिज्ञा भी करवा रहे हैं। इस यात्रा के दौरान भारत के कई राज्यों में हमारा जाना हो गया। कइयों में आगे जाना है। दो विदेशों--नेपाल और भूटान में भी हमारा जाना हुआ है।

मुख्यमंत्रीजी--आप तो अभी तक ४०००० किलोमीटर की पदयात्रा कर चुके हैं। यह बहुत बड़ी बात है।

आचार्यप्रवर--मुझे दीक्षा लिए तैंयालीस वर्ष हो गए।

मुख्यमंत्रीजी--मैं युवा था तो आचार्य तुलसी की तस्वीर देखा करता था और उनके प्रवचन का अंश भी पढ़ता था।

आचार्यप्रवर--गुरुदेव तुलसी भी पटना पधारे थे। वे जब कोलकाता पधारे, तब पटना होते हुए पधारे थे।
मुख्यमंत्रीजी--उस समय मैं तो बच्चा था। आप आचार्य तुलसी के स्थान पर ही तो हैं।
मुख्यमंत्रीजी--भागलपुर में आपका बड़ा कार्यक्रम होने वाला है। वे लोग तैयारी में लगे हैं।
आचार्यप्रवर--वहां अक्षय तृतीया का कार्यक्रम होना है।

मुख्यमंत्रीजी जब वार्तालाप के लिए कक्ष में पहुंचे तो एक सुरक्षाकर्मी जूते पहनकर कक्ष में खड़ा था। उन्होंने तत्काल उसे टोकते हुए कहा--'बाहर जाओ। इतने बड़े संत के सामने जूते पहनकर थोड़े ही रखते हैं।' इसी प्रकार वे मंच पर पहुंचे तो वहां खड़े सुरक्षाकर्मियों को भी इसके लिए डांटते हुए मंच पर न आने का निर्देश दिया।

कार्यक्रम के उपरान्त जैन विश्वभारती के पूर्व कुलपति श्री रामजीसिंह ने पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित होकर बोले--'आज राज्यपाल और मुख्यमंत्रीजी का भाषण सुनकर ऐसा लग रहा था मानों अणुव्रत के कार्यकर्ता ही बोल रहे हों।' जैन संघ के अध्यक्ष श्री प्रदीप जैन बोले--'आचार्यश्री! आज आपने हमारा गौरव बढ़ा दिया। पटना में जैन समाज का ऐसा कार्यक्रम आज तक नहीं देखा।' इस प्रकार कार्यक्रम प्रभावकता दर्शाने वाली लोगों की प्रतिक्रियाएं मिलती जा रही थीं। पूज्यप्रवर ने मध्याह्न करीब १.३० बजे एस.के. मेमोरियल हॉल से प्रवास स्थल की ओर प्रस्थान किया और कड़ी धूप में ३.५ किमी की पदयात्रा कर पुनः कंकड़बाग स्थित प्रवास स्थल में पधारे।

## दुःखमुक्ति का मार्ग है वीतरागता

**२६ मार्च।** चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, वि.सं. २०७४ का शुभारंभ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त अपने उद्बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर लक्ष्य लेकर दिल्ली से चले थे। कितने-कितने राज्यों और नेपाल, भूटान का स्पर्श कर बिहार राज्य में परिभ्रमण कर रहे हैं। आचार्यश्री निरंतर बढ़ते हुए अपने इस वर्ष के लक्ष्य के निकट पहुंच गए हैं। अगर संकल्प की दृढ़ता और तदनुरूप क्रियान्वयन हो तो सफलता को प्राप्त किया जा सकता है। आप लोग आचार्यप्रवर के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते हुए अपने संकल्पों को दृढ़ रखकर अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।'

आचार्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में आत्मा से परमात्मा बनने के लिए साधना की प्रेरणा देते हुए पूज्यप्रवर द्वारा रचित गीत 'राग की बद चेतना को छोड़ दो' का संगान किया।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'इन्द्रिय विषय और मन के विषय रागी व्यक्ति के लिए दुःख के कारण बन सकते हैं, किन्तु जो वीतराग बन जाते हैं, उन्हें वे किंचित भी दुःखी नहीं बना सकते। आदमी को जीवन चलाने के लिए पदार्थों का उपयोग करते हुए भी राग की दुश्चेतना को कृश बनाने का प्रयास करना चाहिए। जो आदमी पदार्थों में उलझा रहता है, वह सेवा भी अच्छी तरह नहीं कर पाता। जो शासन करने वाले हैं, उन्हें भी एक सीमा तक इन्द्रीयजयी होना चाहिए।

तीन शब्द हैं--महेच्छ, अल्पेच्छ, अनिच्छ। अनिच्छ बनना बहुत ही आगे की बात है। आदमी अल्पेच्छ बनने का प्रयास कर अपनी इच्छाओं को सीमित करने का प्रयत्न करे, यह काम्य है। आदमी को पदार्थों से आसक्ति को कम करने का प्रयास करना चाहिए। अमोह की साधना मोक्ष का मार्ग है।'

आज मुख्य प्रवचन के उपरान्त बिहार प्रान्त के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद पुनः पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर का उनसे लंबे समय तक वार्तालाप हुआ। वार्तालाप के अंश पढ़े आगामी विज्ञप्ति में।

## विचार और आचार का सेतु है संस्कार

**३० मार्च।** आज प्रातः परमाराध्य आचार्यप्रवर के मस्तक और मुखारविन्द का लुंचन हुआ। साधु-साध्वियों और समणियों द्वारा निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर ने उन्हें एक-एक घंटा आगम स्वाध्याय की प्रेरणा प्रदान की। श्रावक समाज द्वारा निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर ने उन्हें सात-सात अतिरिक्त सामायिक करने हेतु प्रेरित किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए। पूज्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त साध्वीवर्याजी का अभिभाषण हो रहा था, उस दौरान आचार्य चंदनाजी पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुईं। इस प्रसंग में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के पुनः उद्‌बोधन हुए।

आचार्य चंदनाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में उपस्थित होकर मैं अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूं। मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपनों के बीच ही आई हूं। मैं बिहार राज्य की इस धरती पर आचार्यश्री का स्वागत-अभिनन्दन करती हूं। आप यहां से राजगीर, पावापुरी और वीरायतन पधारेंगे। वहां का समस्त जैन समाज आपके स्वागत के लिए आतुर है। तेरापंथ समाज के साथ गुरुदेव अमरमुनिजी का बहुत निकटता और आत्मीयता का संबंध था। भगवान महावीर की वाणी को दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए आचार्य महाश्रमणजी जिस प्रकार कठोर परिश्रम कर रहे हैं, इसके लिए आने वाला समाज आपका चिरऋणी रहेगा। आप सबके हैं और सब आपके हैं। आपके मिशन अभिनंदनीय हैं।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी का व्यवहार धर्म से संपृक्त होना चाहिए। व्यवहार तब अच्छा बनता है, जब आदमी के संस्कार और विचार अच्छे हों। एक नदी के दो तट की भांति एक तट है विचार तो दूसरा तट है आचार और व्यवहार। एक तट से दूसरे तट पर पहुंचने के लिए सेतु की आवश्यकता होती है। वह सेतु है--संस्कार। यदि विचार संस्कार रूप में पुष्ट हो जाएं तो वे आचार और व्यवहार को भी अच्छा बनाने में समर्थ हो सकते हैं। विचार को सम्यक् ज्ञान, संस्कार को सम्यक् दर्शन और आचार व व्यवहार को सम्यक् चारित्र के रूप में देखा जा सकता है। इन तीनों की संयुति होती है तो मोक्ष मार्ग बन जाता है। आचार की पृष्ठभूमि में सम्यक् श्रद्धा व सम्यक् ज्ञान होना चाहिए।'

गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी का उपाध्याय अमरमुनिजी से संपर्क रहा। आचार्य चंदनाजी का आगमन हुआ है। काठमांडू में भी आपसे मिलना हुआ था। हम सभी अपनी साधना के प्रति जागरूक रहते हुए दूसरों को भी कल्याण के पथ पर अग्रसर करने के लिए अपना-अपना योगदान देते रहें।

अभी हम बिहार प्रांत की भूमि पर विहरण कर रहे हैं। यह भूमि भगवान महावीर से जुड़ी हुई है। इस भूमि पर कहां-कहां भगवान महावीर का पदार्पण और प्रवास हुआ होगा, देशना हुई होगी।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के समय जैन विश्वभारती का संस्थापन हुआ और जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय भी उससे जुड़ा हुआ है। जिसके द्वारा जैन विद्या के प्रचार-प्रसार का कार्य किया जा रहा है। मुझे लगा कि जैन विश्वभारती जैन शासन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण संस्थान बना हुआ है, जहां विभिन्न गतिविधियां चलती हैं। ज्ञान, साहित्य, प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान का कार्य जैन विश्वभारती और जैन विश्वभारती संस्थान के द्वारा हो रहा है। औषध के माध्यम से सेवा का कार्य भी जैन विश्वभारती में हो रहा है। वह संस्थान अच्छा कार्य करने की दिशा में और अधिक आध्यात्मिक विकास करे। बिहार में वीरायतन है। मैंने वहां जाना भी स्वीकार किया है। सभी जैन शासन के विकास का प्रयास करते रहें, यह काम्य है।'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

कार्यक्रम के अंतर्गत करीब ११.११ बजे से सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकरण का क्रम रहा। जिसके अंतर्गत पटना जंक्शनवासियों ने आचार्यप्रवर से सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार की। पटना जंक्शन प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री तनसुख लाल बैद तथा जैन संघ के अध्यक्ष श्री प्रदीप जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के पश्चात् पूज्यप्रवर का आचार्य चन्दनाजी के साथ विभिन्न विषयों पर वार्तालाप भी हुआ।

**औदार्य और प्रेरणा**

आज सायंकालीन गुरुवन्दना के आसपास आचार्यप्रवर ने अग्रणी साधुओं से पूछा--'किस-किस अग्रणी के पास प्रमार्जनी नहीं है।' अग्रणी मुनियों में मुनि जयकुमारजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि मेरे पास नहीं है। पूज्यप्रवर ने उनसे पूछा--'कब से नहीं है?' मुनि जयकुमारजी--'कई वर्षों से नहीं है।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'हमारी मर्यादावली में भी प्रमार्जनी रखने का निर्देश है।' मुनि जयकुमारजी ने निवेदन किया--'आचार्यश्री बक्साने की कृपा कराएं।' आचार्यप्रवर ने तुरंत अपने उपयोग में आने वाली प्रमार्जनी मुनि जयकुमारजी को बक्सा (दे) दी। पूज्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात मुनि जयकुमारजी ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'अभी तो आचार्यप्रवर रखवाएं।' आचार्यप्रवर ने उनके निवेदन को स्वीकार करते हुए फरमाया--'ठीक है, अब से यह प्रमार्जनी तुम्हारे निश्रित है, हम इसका उपयोग कर रहे हैं। बाद में तुम ले लेना।'

पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से यह बात सुनकर उपस्थित मुनिवृन्द के मुख पर मुस्कान छा गई। आचार्यप्रवर ने अनुगामी संतों को भी प्रमार्जनी के विषय में पूछा और जिन-जिन संतों के पास प्रमार्जनी नहीं थी, उन्हें प्रमार्जनी रखने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने सभी संतों को प्रमार्जनी पास में रखने, उसका यथापेक्षा उपयोग करने और प्रतिदिन प्रतिलेखन करने की प्रेरणा प्रदान की।

दिनांक ३१ मार्च को सायंकालीन प्रतिक्रमण से पूर्व आचार्यप्रवर ने मुनिवृन्द की ओर उन्मुख होकर अपना हाथ ऊपर उठाते हुए प्रमार्जनी दिखाई। पूज्यप्रवर का इंगित समझकर मुनिवृन्द ने भी मुस्कान के साथ अपने-अपने हाथ उठाकर अपने निश्रित प्रमार्जनियां दिखाईं तो एक मनोहारी दृश्य उपस्थित हो गया।

**श्री लालू प्रसाद यादव पूज्य सन्निधि में**

आज सायंकाल बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष श्री लालू प्रसाद यादव ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर का उनसे कुछ समय तक वार्तालाप भी हुआ। वार्तालाप के अंश पढें-आगामी विज्ञप्ति में। श्री लालू यादव के साथ राज्यसभा के पूर्व सांसद श्री शिवानंद तिवारी और राष्ट्रीय जनता दल, बिहार के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र पूर्वे भी उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि श्री पूर्वे पूज्यप्रवर के पटना जंक्शन के प्रवास के दौरान चारों दिन आचार्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए।

**पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--**

**केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री हंसराज बेताला, शुजागंज बाजार,**
**पो.भागलपुर-८१२ ००१ (बिहार)**
**शिविर कार्यालय का मोबाइल नं. ७२५८०६६६८७, ७२५८०६६५४५**

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी